दैनिक भास्कर
रविवार, 13 दिसंबर 2020 लखनऊ

रिश्तों में इंसानियत सर्वोच्च

दृष्टिकोण

गीतांजलि सक्सेना

रिश्ता चाहे कोई भी हो हर रिश्ता अहम होता है। उसे बनाये रखना, उसे टूटने नहीं देना काफी हद तक दो लोगों के बीच उन्हीं के हाथों में ही होता है। फिर चाहे वह घर-परिवार के किसी भी रिश्ते में हो, या दो देशों के बीच सहजता व दृढ़ता लाने के लिए किए प्रयासों से संबंधित हो।

कोई भी रिश्ता तभी कायम रह सकता है, जब तक वह परस्पर आदर, स्नेह, आत्मीयता एवं प्रतिबद्धता की सतह पर हो। रिश्तों में अगर प्रेम-रत्न सी उष्मा की तरंगों का समावेश हो जाये, तब विश्वास की ताकत में इस कदर इजाफा हो जाता है, कि दोनों दिलों को आसानी से मिलाकर संबंधों में मिठास लादे। यही नहीं देशों के बीच आपसी मतभेद मिटा कर उन्हें पुनःसम्मानपूर्वक रिश्तों में वापस लौटा देने की क्षमता भी रखता है। विश्वास की ताकत को हलके से ना आंके! इसकी श्रृंखलाओं में वह ताकत है, जो दो विपरीत विचारधारा, विपरीत परिवेशवाले इंसानों को भी अटूट बंधन में बांधे रखता है।

और अगर यह कमजोर पड़ जाये, तो गहरी नींव तक हिला देने का कारण बन जाता है। रिश्तों में विश्वास एक जादुई छड़ी है... जो जड़. पत्थर को भी भगवान का रूप दे सकती है। हमारे सामाजिक ढांचे और संस्कृति में रिश्तों नातों का विशेष स्थान है। सामाजिक जीवन को सुचारु रखने के लिए रिश्तों की महिमा को नजरअंदाज करना घातक साबित हो रहा है। यही वजह है कि आज वर्तमान परिवेश में रिश्तों का नया ही स्वरूप देखने को मिल रहा है। आज की पीढ़ी दौड़ती भागती जिन्दगी में इन इंसानी रिश्तों और उसकी अहमियत को पीछे छोड़ती जा रही हैं। वे सब भौतिकवाद की ओर इस कदर बढ़ गये है कि वे हमारे समाज में मानवीय मूल्यों और पारिवारिक वचनबद्धता को भूलते जा रहे हैं। यहाँ तक कि वह अपने को वास्तविक रिश्तों को निभाने और उसमें मिठास लाने के लिए भी असमर्थ महसूस करते हैं। इसका कारण यही है कि, वे रिश्तों को समझने के लिए वक्त नहीं दे पा रहे हैं। यही नहीं, उनकी नजर में रिश्तों के मापदंड भी बेहद खोखले होते जा रहे हैं। हर रिश्तों के प्रति उनका रवैया भावनाओं से जुड़ा होने से ज्यादा व्यावहारिक हो गया है। जिसे वे आदान प्रदान एक डील के आधार पर निर्भर रखना ही अधिक समझदारी मानते हैं। बदलते युग में रिश्तों की परिभाषा ही बदल गई है। अधिकांश लोग हर रिश्ते को अपना नफा नुकसान के आधार पर नापते तौलते हैं। ऐसे रिश्तों की शुरुआत अक्सर तीन शब्दों यानी आई लव यू से शुरू जरूर होती है, पर जिसकी आयु और भविष्य अधिक समय नहीं होती, और ऐसे रिश्ते कुछ शब्दों के साथ ही खत्म हो जाते हैं। इस कटु सत्य का कारण उनमें सहनशीलता का घोर अभाव है। ऐसे में झुकना, सहना, समझौता करना, रिश्तों को निभाना और उसे जीवित रखने के लिए हर संभव प्रयास करना बस किताबी शब्दों तक ही सीमित रह गया है।

कोई भी रिश्ता तभी कायम रह सकता है,जब तक वह परस्पर आदर, स्नेह, आत्मीयता एवं प्रतिबद्धता की सतह पर हो।

रिश्तों के धागों के साथ बंधे रहते हुए, जिंदगी जीने के इस अंदाज का अनुभव बेहद खूबसूरत है। ये रिश्ते ही तो हैं, जो हमारे जीवन को आनंदमय और हर कठिनाइयों को आसान और सरल बनाने में हमारी मददगार साबित होते हैं। हम सबके जीवनकाल में अनेक रिश्ते हर रूप में जन्म लेते हैं, कुछ प्रकृति की ओर से प्राप्त होते हैं जो हमारे जनम से जुड़ते हैं। इन रिश्तों को बनाने की कमान सिर्फ ईश्वर के हाथ में होती है। पर जिन्हें निभाने और संवारने का दायित्व पृथ्वी पर हमें दिया जाता है। रिश्ते हमें ईश्वर का सौंपा एक सुखद अहसास व उसका माननीय तोहफा है।

गौरतलब है कि इसका सही मूल्य समझें...रिश्ते बेशकीमती तो होते ही हैं। पर हमें यह भी समझने की जरूरत है कि...,जरूरी नहीं होता कि हर परिवार को हर रिश्ते का सौभाग्य प्राप्त होना संभव हो। कुछ रिश्ते हमारे पसंद के भी होंगे, जिन्हें हम खुद चुन सकते हैं। इस श्रेणी में दोस्तों का स्थान विशेष है, क्योंकि वह आपको अपने जीवन में अवगुणों के साथ स्वीकार करने हौसला रखते हैं। एक सच्चा दोस्त हर मुश्किल वक्त में साथ खड़े होकर, आपको रास्ता दिखाने की ओर आपकी हिम्मत बन कर, निःस्वार्थ मार्गदर्शन करने की ताकत प्रदान करता है।

कुछ रिश्ते सामाजिक रीति रिवाजों से जुड़े होते हैं, जिन्हें हमको परम्पराओं के तहत निभाने के प्रावधान के साथ दिया जाता हैं। हर रिश्ते निभाने का मकसद सिर्फ आपसी संबंधों में मधुरता लाना भर होता है।

इन रिश्तों में कुछ हमारे कार्य क्षेत्र से जुड़े होते हैं। यहाँ भी सौहार्दपूर्ण माहौल बना रहे, उसके लिए हमें सहयोगियों के बीच कार्य करने के प्रति आपसी सहयोग और तालमेल बनाए रखना आवश्यक होता है।

इस सदी में इंटरनेट पर नए रिश्ते बनाने का दौर भी चला है, जिसको निभाने और परखने की क्षमता अगली और कई पीढ़ी की समझ से भी परे है, क्योंकि इस मैदान में झाँकने की क्षमता ही उनमें बहुत सीमित है। यह भी सच है इन रिश्तों को बने रहने और निभाने के तरीके के परिणाम बहुत सुखदायक नहीं है। ऐसे बने रिश्तों में दूरियाँ ही रिश्ते के भविष्य को अधर में लटका रखती हैं।

इन सब के बावजूद यही कहना तर्कसंगत होगा कि रिश्ता कोई भी हो, उसे पूरी ईमानदारी और सच्चाई के साथ निभाये। हम सबके जीवन में हर रिश्ते का एक अहम स्थान है, उसकी न सिर्फ जरूरत समझे...बल्कि उनका सम्मान करें और उसे सहेजें। किसी भी स्वस्थ रिश्ते को फलने फूलने या विकसित होने के लिए उसे पूरी स्वतंत्रता देनी चाहिए। रिश्तों को अवधि पर निर्धारित न करना, और समय पर छोड़ना ही समझदारी और कारगर होता है।

जिंदगी के हर रिश्ते चाहे वह सामाजिक, आत्मिक या राजनीतिज्ञ हो, उन सभी रिश्तों को दिल से जीयें। इन्हें बनाये रखना, उन्हें सुधारना, सँवारना, सँजोना सब हमारे हाथों में ही है।

रिश्तों में विश्वास, शब्दों में मधुरता, रूठने मनाने का सिलसिला,
बना रहे, जिसमें स्नेह एवं त्याग का तड़का,
जीयें हर रिश्ता दिल से,
अनुभवों का आदान प्रदान करें, बनें मिसाल एक दूजे के लिये,
न खुद रहो उदास, न किसी को रहने दो, करो भरोसा इस ताकत पर,
रिश्तों के हर रूप, उसके हर रास रंग में, हर हाल में रहें साथ,
जिंदगी को इसी अंदाज में जीयें,यही तो है वरदान ईश्वर का।